दिल हो दर्पण

काव्य संग्रह

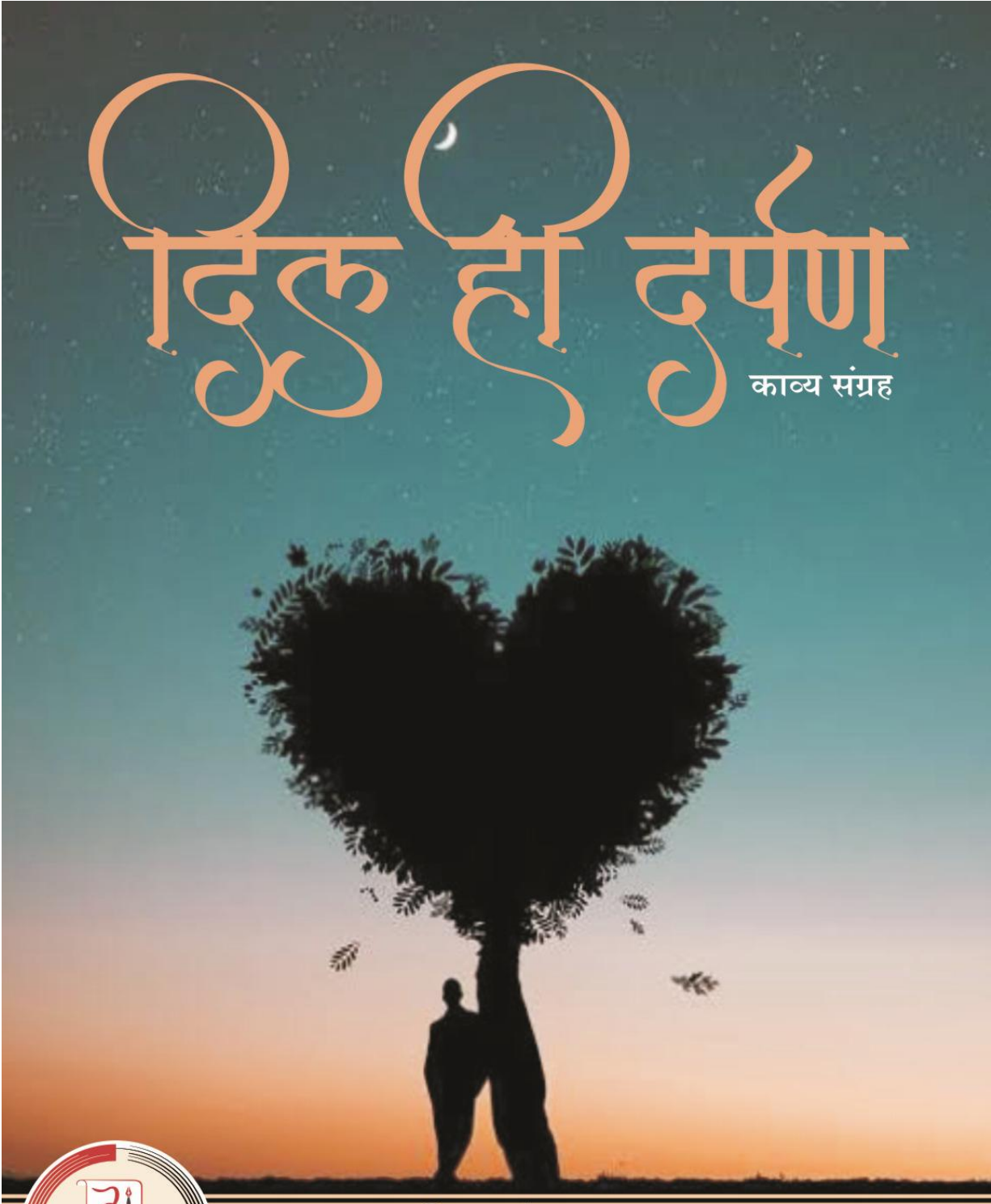

किरण मोर

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

दिल ही दर्पण

काव्य संग्रह

किरण मोर

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-058-2"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **किरण मोर**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

DIL HE DARPAN BY KIRAN MORE

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मेरा मन

पता नहीं क्यों मेरा मन जीवन में घट रहीं घटनाओं पर ही अटक जाता है और आज की ज्वलंत समस्याओं पर ध्यान चला जाता है। वैसे तो जीवन का सार ही सुख दुख का आधार है, और यही जीवन का सत्य भी कि परिस्थितियों वश इंसान को जीना पड़ता है, पर कुछ लोग इसे अपने जीवन का आधार बनाकर ये धारणा ही बना लेते हैं कि यही हमारा भाग्य है, या हमारी नियति है-एक सत्य यह भी है अपने कर्म से अपने भाग्य को बदला जा सकता है, भले ही पूर्ण रूप से न बदल पाएं लेकिन उसे सही आकार दे ही सकते हैं जिससे वह और विकृत रूप धारण न कर सके और अपने किये हुए सही कार्यो से स्वयं का मन संतुष्ट और प्रसन्न भी तो रहे। इसका एहसास स्वयं के मन में होना चाहिए।

वैसे भी मानव मन को दर्पण की उपमा दी गई है। अतः जब चारों तरफ देखती हूं- माहौल ये बिगड़ा हुआ तो, स्वतः लेखनी चलकर मन के भाव उकेर देती है, और फिर-

जंग छाई हर तरफ है, बिन ये देखे कि
कोई वहां शामिल है अपना।

इस तरह इस वातावरण का प्रभाव मन पर ऐसा पड़ता है कि समझाइश के स्वर ही लेखनी लिखती है। अपने उन्ही शब्दों और स्वरों को गजल और मुक्तक के रूप में पन्नों पर उतारा है। और एक तरफ मैंने संसार में अपने आने का एक मकसद तय किया है और उसे ही अंजाम देने की कोशिश की है कुछ व्यथाएं जो मानव जीवन का अर्थ पूर्ण करती हैं, उनको इस संग्रह में में गजल और मुक्तक के रूप में सजाया है, इस आप सभी सम्मानित पाठक गणों से बहू मूल्य प्रतिक्रिया अपेक्षित है।

किरण मोर कटनी म.प्र.

अनुक्रमणिका

1.	मुक्तक	5-17
2.	आईना	18
3.	तन्हाई	19
4.	यारी	20
5.	प्यार की कशिश	21
6.	मुहब्बत	22
7.	दिल ही दर्पण	23
8.	भ्रम	24
9.	शरारत	25
10.	अप्सरा	26
11.	गहरा दर्द	27
12.	अधुरा मिलन	28
13.	बदनाम वफा	29
14.	बंधन	30
15.	पहेली	31
16.	संशय	32

मुक्तक

(१)

तराशा है हमें जिसने, उसे हम पत्थरों में तलाशते
मन का रूप हम सवांरें, जिसे हम तन में हैं पालते,
तन बदन की कुरुपता चले, स्वच्छ मन सच्चा लगे
मन की सुंदरता से सच्चा जीवन हैं अपना ढालते।

(२)

हथौड़े की मार सहकर जो तूने मानव का रूप पाया
जिन्दगी तराश अपनी कर्म छैनी ले, छोड़ माया
कोई पहचाना जाएगा जब तेरी तराश से
बन जाए तू भी उसका प्यारा, जिसने तुझे बनाया।

(३)

आओ आज हम किसी की जिंदगी संवार दें
खाते में जो है अपना, उसको थोड़ा उधार दें
नफरत बहुत जहां में फैली, मिटाकर इसे
हम जिन्दगी को अपनी भी, थोड़ा सा प्यार दें।

(४)

काम न कर ऐसे कि शर्मिंदा दो गज जमीन हो
कुछ कर दुनिया में ऐसा कि मौत भी हसीन हो
हो जाए कुछ खता भी, तुझसे गर कोई कभी
फिर भी ये दुनिया तुझपे, बस नाजनीन हो।

(५)

जिन्दगी में हम जो चाहें मिल जाए जरूरी तो ये नहीं
उसे पाने गलत कदम भी उठाएं, जरूरी तो ये नहीं
सब्र करना ही पड़ता ही हमें कई बार न चाहते हुए
हम बस अपनी खुशी में मुस्कुराएं, जरूरी तो ये नहीं।

(६)

पत्थर पे खुदा हुआ खुद है, खुदाई तेरी गजब की
चलता फिरता सब है मानव संग दुनिया तेरी अजब सी
सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी,बादल, ग्रहतारे सब चलायमान हैं
दिखता नहीं पर तू कहीं स्थिर है आंखें खुली हुई हैं तब भी।

(७)

आवाजें होती हैं जब शाखों से पत्ते टूटते हैं
दिल भी मगर अक्सर सन्नाटों में ही टूटते हैं
गम ये नहीं कि इस कदर,लुट गए हम यहां
दर्द तब हुआ जो देखा, अपने ही अपनों को लूटते हैं।

(८)

जिन्दगी की फिर से एक नई सुबह हो गई
जीवन की सांसें भी तो कुछ और कम हो गई
आज किसी को खुशियां बांटकर इसे संवार दें
हमारी पुरानी बातें सारी अब वैसे ही थम गई।

(९)

मैंने तो रिश्तों की खेती में प्रेम बोया था
अपनेपन के जल से सींच उसको सोया था
दर्द के मगर दाने, काटा तो उसमें स्वार्थ निकला
अश्कों से निगल के उनको मैं फिर कैसा रोया।

(१०)

जिस किसी को अपना कहा, उसी ने किनारा लिया
दिया किसी ने नहीं पर मेरा सबने सहारा लिया
पलट कर क्यूं देखें अब काम जो निकल गया है
वजूद ही मेरा अपना अश्रुओं संग बहती धारा गया।

(११)

आंखों से अश्क बहते मेरे अकेले पन के साथी
हमेशा से ही मेरा साथ निभाते आए हैं
कभी मुझे न अकेली छोड़ा और न जाएंगे
रिश्ते हजारों हैं मगर बेगाने नजरें चुराते आए हैं।

(१२)

जीवन में जो मिले न उसका रंजोगम न कर
रास्ते बहुत मिलेंगे आगे,उनपे तय कर सफर
मिल जाएगी मंजिल भी, कहीं किसी मोड़ पर
कभी फूलों की हों राहें तो कभी कांटों उलझकर।

(१३)

मौन रहकर वो हम पे सितम कर रहे हैं
बिन बोले ही दिल पर घाव कर रहे हैं
हमारे लिए ये मरहम क्या ही लगाएंगे
जख्मों को ये हमारे नमक से मल रहे हैं।

(१४)

रिश्ते कोई कैसे हों, हमें निभाते रहना सदा
फर्ज जो है हमारे हमें करने पड़ते हैं अदा
रिश्तों का नाम ही जीवन है कटता नहीं अकेला
जब कोई साथ न हो हमारे कहलाते हैं गुमशुदा।

(१५)

मशहूर नाम हमारा हो गया है, कैसे कहीं से
खाए हैं हमने खंजर, अपनों के ही सभी से
घाव बहुत गहरे लगे थे फिर भी मर न पाए
मौन करके अपने मन को, जीते हैं जिन्दगी से।

(१६)

करना है जिन्दगी पार तो मंजिल तलाश कर
इंतजार में है तेरे वो शायद यहीं कहीं पर
उम्मीद का दामन न छोड़ कर किनारे बैठ हारकर
थाम पतवार बैठ जाकर, बीच धारा छोड़ नाव पर।

(१७)

जिस किसी की है आज कश्ती, उसी का है किनारा
लेकिन जो हुआ अकेला, वो भी फंसा है बीच धारा
रिश्तों के मायने ही होते सहारा देके पार करना
सबसे पहले लेकिन मुसीबत में वो ही ढूंढते किनारा।

(१८)

जीवन में चाह रखो ऐसी जिसमें तरंग हो उमंग
जिन्दगी जियो जैसी कोई हवा में उड़ रही पतंग
कटकर कहां गिरना है उसे,पता ही नहीं होता है
बैखौफ लहराती हवा में,पहचाती है नियति के रंग।

(१९)

रिश्तों की हार जीत, जब जब भी जवां होती है
कोई झुके कोई जीते तकलीफ चेहरे से बयां होती है
सर उठाता है अहम जब जब भी अपने ही किसी का
एक चिंगारी ही से रिश्तों की जिन्दगी धुआं होती है।

(२०)

आंखों से अश्रु मेरे यूं धार बहते गए
फिर भी मुस्करा कर हम सबसे कहते गए
खालिश खुशियां हीं थीं हमेशा से जीवन में
जुल्म उस सितमगर के चुपचाप हम सहते गए।

(२१)

गुमशुदा खुद है वो लेकिन, हमें जल्द खोज लेती है
स्वयं भले दिखाई नहीं देती हमें दूर से देख लेती है
कब कहां किस मोड़ पे जाने उससे मुलाकात हो जाए
एक ही पल में जिस्म से सांसों की डोर तोड़ देती है।

(२२)

अश्क बनाकर अपने दर्दों को पी लिया
तार-तार हुए अपने जख्मों को सीं लिया
देखा मेरे दर्द से भी बड़े जमाने में बहुत हैं
फिर तो हंसते मुस्कुराते जीवन को जी लिया।

(२३)

बीती निशा के अश्क सारे पलकों में समा गए
भोर की नई किरणें, चेहरे पर खुशी दिखा गए
कांपते लरजते होंठों को जो मुस्कान छू रही
समंदर से गहरे दर्द को, दिल में छिपा गए।

(२४)

दास्तान अपनी हम क्या किसी को सुनाएं
गम सहकर भी इतना, खुशियां ही हम मनाएं
कह सकें न अश्क भी हमारे सहमे हुए हैं
होंठों पर हंसी है संग गीत मधुर गुनगुनाएं।

(२५)

कभी कभी हम जो बोते हैं, वो काट नहीं पाते हैं
प्रेम सींच के भी छींटे मुकद्दर से सूख जाते हैं
सच की मेहनत और कोशिश का वो फल नहीं मिलता
किसी जन्म के कर्मों से किसी और को मिल जाते हैं।

(२६)

आज रिश्ते कागज के जैसे फूल हो गए
प्यार के उन पलों की खुशबू हवा संग धूल हो गए
मिलने बैठने का पास किसी के समय कहां है
रिश्तों के ठिकाने मोबाइल में सब गुम कूल हो गए।

(२७)

रिश्तों की खेती में मैंने प्रेम बोया ये सफर है
पर काटा तो स्वार्थ निकला, मेरा मुकद्दर है
अपनेपन की सींच भी दिला सकी न फल वो
दर्द के दानों को अश्क संग निगला वक्त सितमगर है।

(२८)

सजना मेरी बंध गई, तुम संग प्रीत की डोर
तुम ही तुम को देखती मैं अपने चहुंओर
छोड़ तुम्हें मैं जाऊं कहां, तुमसे है वजूद मेरा
मेरी डोर का आदि तुम, तुम ही अंतिम छोर।

(२९)

जीने की नई राह और अंदाज मिल गए
जीवन में क्रांति ला ने को आगाज मिल गए
कर सके थे न जो अब तक वो कर दिखाएंगे
पंख हो गई है लेखनी, हम परवाज बन गए।

(३०)

सपना गगन का हो मगर, धरती पर पूरा करना
साफ पाक दामन को रख, नित नव ऊंची उड़ान भरना
सपनों को हकीकत बनाने का जज्बा कायम रख
पर दिल में भी सुकून हो, भावनाओं में करुणा रखना।

(३१)

जिन्दगी संवार कर किसी की, जो मजा आता है जीने में
उसकी महक होती है, उस मेहनत के पसीने में
हमारी वजह अगर कोई जीवन गुलजार होगा जाए
कितना सुकून होता है तब हमारे भी सीने में।

(३२)

मेरा वजूद तुमसे है, ऐ मेरे सनम
दिल से न दूर करना है तुझे कसम
प्यार हमारा ये रूह में समा गया है
तेरी ही रहना चाहूं ले लूं मैं सौ जन्म।

(३३)

वक्त हाथ की लकीरों में खोजते ही रह गए
चाहा करना बहुत कुछ था सोचते ही रह गए
क्या पता कि ये थी किस्मत, या अपने साथ थी
करना था जब उस वक्त को कोसते ही रह गए।

(३४)

स्वार्थी है सारी दुनिया और स्वार्थ के ही रिश्ते
कर दिए हैं इसने मानवता औ धर्म के भी हिस्से
बना कोई सिक्ख, ईसाई कोई हिन्दू और मुसलमान
माने अगर जो धर्म को, मानव का धर्म मान।

(३५)

किसी की जिंदगी आज यूं बेजार न होती
दुनिया सबूतों की गर तलबगार न होती
अपनी मसरूफियत पे हमने पर्दा डाल रक्खा है
वर्ना किसी को हमारी जिंदगी की दरकार न होती।

(३६)

तेरी आंखों में हर लम्हा, तस्वीर जो मेरी बनती थी
कहां है वो मेरा दीदार, करते कभी न थकती थी
श्वेत श्याम सी परछाईं वहां दिखती है अब
कैनवास पर जो रंगों भरी, तस्वीर बोलती सी बनती थी।

(३७)

सारे रंग उड़ गए, धूमिल सा चेहरा हो गया
कैनवास उधड़ा-उधड़ा सा मटमैला कोरा हो गया
तस्वीर न बनी जो आंखों में बसा करती थी
प्यार का था कभी अब वो नफरत का घेरा हो गया।

(३८)

हजारों सपने मेरी पलकों में पल रहे हैं
दिन-रात मेरे पल सूर्य, चंद्र से ढ़ल रहे हैं
करूं जतन दिन-रात कोई सपना टूट न जाए
अपनी ओर खींचे जिन्दगी, मौत संग चल रहे हैं।

(३९)

किले बंद थी सनातन से, ढह गई प्राचीर
बदल गई ऐसी थी जो नारी की तकदीर
देवी गर हैं मानते, पूज्य भी तो मानिए
जकड़े पांव नारी के, मिटा ऐसी लकीर।

(४०)

बना रखी है हमने जेहन में उसकी जो तस्वीर
कोमल,अबला मूर्ख नहीं उसकी वो तासीर
आधा अंग तुम पुरुष, वह प्रकृति
आन की आए बात उठा लेती शमशीर।

(४१)

बीती निशा के अश्क, पलकों में समा गए
भोर की नूतन किरण, चेहरे पर खुशी दिखा गए
कांपते लरजते होंठों को जो मुस्कान छू रही
समुन्दर से गहरे दर्द को दिल में छिपा गए।

(४२)

अपनों में ही इधर-उधर, टुकड़ों सा बंटते गए
तलाशते अपने वजूद को, खुद ही से घटते गए
जिसने चाही जब जरुरत, टुकड़ा एक उठा लिया,
वर्ना तो उनकी जिन्दगी से, कबसे थे छंटते गए।

(४३)

इधर उधर कहां जाऊं, मरना है तेरी ही बाहों में
कदम पीछे चलेंगे मेरे, तेरी ही बनाई गई राहों में
मेरा वजूद तुमसे, और अपना यहां क्या है, था
जीवन कुछ नया नहीं, टूटा दिल तेरी ही पनाहों में।

(४४)

मैंने भी चांद को देखा है, रुत भी रही सुहानी
पर आज क्या अनोखा है, चांदनी भी है दीवानी
करती है ठिठोलियां सी छुप छुप के वो तारों में
रह रह कर बिखेरती है, कमसिन सी वो जवानी।

(४५)

मेरी वफाओं का कभी, तुमने सिला दिया नहीं
तुमसे मिली सजाओं का मैंने, गिला किया नहीं
निखर निकल ही आए पार हर कसौटी से तेरी
कि माथे शिकन दिखा, मैंने कभी जिया नहीं।

(४६)

मेरी मजबूरी का लुत्फ ले, तुम उसे वफा कहते रहे
बिन किए गुनाहों की हम भी, फिर सजा सहते रहे
शायद ये थी प्यार की दरकार या फिर इंतिहा
उदास पलकों में भरे सपने, अश्क बन बहते रहे।

(४७)

वफा ए मिली कभी न उनसे,मगर प्यार हो गया
जफाओं का उसकी ये दिल तलबगार हो गया
मौन रहने की जो आदत है उनमें मुस्करा कर के
अब वही चेहरा मेरे जीवन की बहार हो गया।

(४८)

जिन्दगी साथ चलेगी तेरी हर राहे कदम
मेरा तू साथ भी न दे तो होगा मेरा सनम
मैंने तुझको वर लिया, हर एक लम्हा ए वफा
तुझे हमराह छोड़ जाऊं न ये रखना भरम।

(४९)

अटल सत्य है मौत नहीं वह टाली जाए
आती अपनी चाल न देखी भाली जाए
न होता एहसास उसके पास गुजरने का
जिसकी आए लेकर माने,वार न खाली जाए।

(५०)

कब के बिछड़े आज मिले हैं साथ निभाते जाएंगे
राहों के कांटे कंटक सब बीन उठाते जाएंगे
साथ छोड़ना एक दूजे का हो न गवारा
सुख दुख के सारे द्वारे साथी बन लांघ दिखाएंगे।

(५१)

खुशबू गुलाब की क्यों न हो,कांटे उपहार आते हैं
देख मुफलिसी अपनी, अश्क पलकों में समाते हैं
क्या नहीं किया है अपने जान ओ जिगर के लिए
बेवफाई कर बिन पल गंवाए किस कदर यूं रुलाते हैं।

(५२)

नयन चक्षु खोलो उठो, सूरज सर पर उग आया है
आज हमारे लिए सवेरा, नया एक फिर लाया है
दिन अपना है निशा पराई, गई जहां से आई थी
फल आशाएं मत पालो जो कर्म सही अपनाया है।

आईना

जिन्दगी है चार दिन की, जरा मुस्कुराइए
ख्वाबों के दायरे से, हकीकत में आइए।

ख्वाब होते हैं सुहाने, पलकें जब तक बंद हैं
खुल जो गई है आंखें, तो अब जाग जाइए।

आपके आसपास हैं जो, आपके अपने सभी
घावों पे उनके भी तो कभी मरहम लगाइए।

दुख में भी हैं जो आप तो, न कड़वी जुबान हो
मीठे ही बोल बोल, होंठों पर अपने सजाइए।

खुशनसीबी तो आपकी चौखट पे खड़ी
स्वागत में उसके हाथ जरा, अपने बढ़ाइए।

अपने सुखों को दूसरे में, खोजते रहे
खुद के नसीब को भी कभी, आजमाइए।

आए हैं हम अकेले, किरण जाना भी है अकेला
अपना कोई तो हमसफर, जहां में बनाइए।

तन्हाई

मेरी हर धड़कन तेरे लिए धड़कती है
मेरी हर रात तेरी आगोश में ढलती है।

तू बना दे गर कोई रात हसीं हो जाए
चला जो छोड़ के तन्हा अकेली जलती है।

किसी जुल्फों के साए में, मुझे छोड़ चला जाता है
रेत जैसे मेरी मुट्ठी से यूं फिसलती है।

जवां होती है मेरी रात चांद देख राह तकती
दिल मेरा खाली मगर चांद पे भी बस्ती है।

आज भी न आया तू, ओ मेरे जाने जिगर
इंतिहा इंतजार की है, चाहत मेरी सुलगती है।

यारी

मैं तो सनम तेरी ही, हमेशा प्यारी हुई
तू तो है यार मेरा, मैं तेरी यारी हुई।

सबकी आंखों में बसे थे, अचंभित से
हमारी यारी से रखती हुई व्यवहारी हुई।

अब तलक उन ही रिश्तों को जिया हमने
जिनसे थी सीखना वो दुनिया दारी हुई।

कि वो सबसे थी निराली, सभी रिश्तों में
जब से मेरी मेरे यार से यारी हुई।

एक दिन फिर न जाने क्या वो हुआ
खफा मुझसे बहुत मेरी ही यारी हुई।

बस तू ही एक अपना सा लगा था
फिदा जिस पर मेरी थी खुद्दारी हुई।

मैं तो बढ़ चुकी थी तेरा सहारा लेकर
तेरे ही नाम वफा मेरी सारी हुई।

किसी ने किया खिलाफ मेरे, तुझे भी
बदनाम मेरी वफा सरे बाजारी हुई।

यार मेरा मुझसे इतना रूठ गया था
जिन्दगी की खुशियां हवा सारी हुई।

प्यार की कशिश

सितारे तोड़ हम लाते, अगर तुमने कहा होता
जमीं आकाश मिलवाते, अगर तुमने कहा होता।

तड़पती है वफा जब जब इम्तिहां इश्क देता है
जिगर हम खुद का जलाते, अगर तुमने कहा होता।

तुम्हारी होंगी तन्हा रातें, मेरा तो दिल ही है तन्हा
हम तो फिर दौड़ आ जाते, अगर तुमने कहा होता।

न रहबर बन के तुम आए, मेरे सरकार राहों के
हमीं तुम तक चले आते, अगर तुमने कहा होता।

मुहब्बत

हर लफ्ज तेरे जिस्म की खुशबू में ढ़ला है
उसकी महक खिंचता तेरे पीछे मेरा मन ये चला है।

सिर्फ अब तेरी आहें प्यार मेरा भरता है
दिल भी अब तो मेरा ये तेरी ही ओर चला है।

खुद ही खुद को भूलकर, तू ही तू बस याद है
खींच अपनी ओर मुझे तू जाने क्या बला है।

मुकद्दर मेरा बन गई है जहां में दूजा कौन है
जिस्म ओ जान मेरा तेरे ही रंग ढ़ला है।

दिखना सुनना बंद हो गया है मुझे तो
मेरी पलकों में बस तेरा ही स्वप्न पला है।

दिल ही दर्पण

दिल-दर्पण में देखिए जरा, दीदार कीजिए
खुद को निहार, खुद से ही प्यार कीजिए।

अंतर भी क्या है सुंदर, या तन ही सिर्फ है
तन मन के दोनों रूप अंगीकार कीजिए।

तम खो रहीं हैं खूबियां, पाने को रोशनी
उजाला उनको देने आने की मनुहार कीजिए।

मिल जाएं कर्म-भाग्य, बुलंदी दिलाएंगे
लेखा होगा हो पूरा, थोड़ा इंतजार कीजिए

अहम में बिगड़ गए हैं तेरे, काम जो अगर
गलतियों को भी फिर अपनी, स्वीकार कीजिए।

हाथ उठा के शुक्रिया दे, उसकी मेहरबानी का
बनाए रखे यूं ही फितरत, सबके सदके ये पुकार कीजिए।

बांटनी हैं तो खुशियां गर, सारे जहान को
खत्म होने से पहले, जिन्दगी इश्तिहार कीजिए।

इनायत इतनी मिल गई है जो उस रहबो खबर की
होली औ दीवाली, ईद सा त्यौहार कीजिए।

भ्रम

रात भर जागा हुआ सा, ख्वाबों में जाता गया
अधखुली आंखों से देखा, नींद समाता गया।

पलकों पर समाई तेरी तस्वीर के सामने
अपना मन तेरी मुहब्बत में भरमाता गया।

जा चुकी है तू जहां से एक पल ये भूलकर
तेरे मगर एहसास से दिल को लुभाता गया।

खुली गई हकीकत सारी नींद जब मैं जागा
आंखों में अश्कों को भर तेरी यादों में खाता गया।

याद आएंगे सदा ही तेरे संग जो बीते हैं पल
अश्रु भरे नैनों में तेरे अक्स वो पाता गया।

शरारत

तेरी हर चाल में झलकती है मस्ती भरी नजाकत
आंखों की शोखियां तेरी कर रहीं इबादत।

मैं ढूंढता जिसे था कमसिन वही है शायद
दिल में थी जो समाई क्या तू है मेरी चाहत।

जल जाती है जब शमा तो परवाना चला जाता
बुझ गई है वो शमा महफिल भी हुई है रुखसत।

कजरारे नैनों की जो तेरी चिलमन है उठ के गिरती
चेहरे पे तेरे झलकती है ज्यूं तेरी मासूमियत।

काली लटों को अपनी तेरी अंगुली में उलझाना
मुझको रिझाने की है ये, कोई तेरी शरारत।

आना तो पास चाहूं, पर डर है कि सताए
क्या मुझे है एक बार तुम्हें छूने की इजाजत।

मेरा जीना मरना अब तो तुझसे शुरू खतम है
क्यूं कि बन गई है मेरी पाक वो मुहब्बत है।

अप्सरा

नभ से उतर के आई वो, अप्सरा कोई रानी
मात दे रही, उर्वशी और रंभा को दीवानी।

समा गई मेरे दिल में घर कर गई है जैसे
रुका हुआ स्पंदन, है लहू ठंडा हुआ पानी।

सरसरी सी आवाज में, खनकते हुए वो बोली
आई हूं खुद ही चलकर, फिर क्या है परेशानी।

अपलक उसे निहार सोचूं, क्या मैं उसे ओढ़ा दूं
देर कहीं न हो जाए, सुंदर चुनरिया धानी।

लेकिन मैं नाजनीनों की, मुहब्बत को जानता हूं
आंखों में सजा बनकर रहता है सदा पानी।

गहरा दर्द

गम से भरे नैनों में अश्कों को छुपाएं कैसे
बोझ दिल का है गहरा इतना उठाएं कैसे।

चलते फिरते मेरे दर पर आ गया है ये रंज
आए हुए को दर से अपने लौटाएं कैसे।

मैं छुपा लूंगी गम-ए-दर्द अपने सीने में
अपने हालात ये दुनिया को दिखाएं कैसे।

मेरी जुल्फों की घनी छांव तुझे भाती थी
तेरी आहट से महकती थीं, बिखराएं कैसे।

अधूरा मिलन

रात सुहानी दे गया है सूरज, संध्या तक ढलते-ढलते
एक नजर ही क्षितिज दिखा, तब मिली प्रेयसी चलते-चलते।

रोज मिलन की आस रहे, नजर चुराकर देखा करते हैं
रात चाँदनी खिले गगन, सूरज छिपता आंखें मलते-मलते

आग उगल दिन भर घर आए, रोक रास्ता कहीं खड़ी हो
रहे बड़ी बेचौन करूं क्या, सर्रर निकलती ठंडक सी झलते

एक कभी न होना है जाने पर, फिर भी इंतजार एक दूजे का है
एक है शोला दूजी शबनम, रोज मिलें पलकों से छलते-छलते

सूरज है आगोश समाता, अपनी निशा की ठंडक पाकर
बिन मिले अचंभा देखो रे, परवान चढ़ी मुहब्बत पलते-पलते।

बदनाम वफा

मेरी सारी जिंदगी ये आज तेरे नाम हो गई,
तन्हा रहते रहते उम्र अब तमाम हो गई।

तेरे प्यार की कसक दिल की चुभन बनके,
तड़पाती रही मुझे सुबह से शाम हो गई।

छुप-छुप के मिल गुफ्तगु किया करते थे,
हमारे प्यार की चर्चा तो सरे आम हो गई।

जा रहा हूं मैं इस जग से नाम तेरा ही लेकर,
मुहब्बत इस कदर जहां में बदनाम हो गई।

इंतजार मैं करता रहूंगा जन्मों जन्मों तक तेरा
भले तेरी वजह मेरी जिन्दगी ना काम हो गई।

बंधन

बंधन में भी जो प्यारे होते हैं,
रिश्ते वो ही उजियारे होते हैं।

बंधे हुए हैं जो वे ही रिश्ते कहलाते हैं,
क्या मंजिल बिन नींव आधारे होते हैं।

जो बंधा नहीं किसी भी बंधन में,
तिमिर पड़े वो जीव बेचारे होते हैं।

जीवन में प्रलय दिखलाये सागर
कहां फिर उनके किनारे होते हैं।

बंधन तो जनम से मरण तक है,
कब जीव स्वछन्द बयारें होते हैं।

बिन बंधन के कहां कब जन्म हुआ,
मरकर भी अनुबंध जो ईश्वर से वो प्यारे होते हैं।

पहेली

पग रखना तू संभाल बड़ी कठिन डगर है
जीवन नहीं ये आसां, कांटों का सफर है।

सुख दुख तो साथ चलते जीवन में हर किसी के
लेते हुए चलें हम उनसे अनुभव के पहर हैं।

अपना लिया जिसने हरपल को हंस के सहना
समझो है कर ली तय उसने जीवन की भंवर है।

मिलते यहां कुछ अपने और कुछ हैं पराए भी
समझो न किसी को वो तेरा जान-ओ-जिगर है।

दिल में जो जिसके होगा शायद वो,वो नहीं है
चेहरे पे एक और चेहरा उसके आता नजर है।

कर लेना तुम भरोसा इतना भी न किसी का
पड़ जाए उससे पीना धोखे का जहर है।

सुलझा ली जो ये पहेली सत्कर्म राह चलकर
पा ली है अब तो समझो बस रब की मेहर है।

संशय

कितने हैं पास फिर भी क्यूं दूरियां लिए हैं
चांद और धरा तो मजबूरियां लिए हैं।

हम पास आ तो जाते अपने दिलों की खातिर
दिया तो नहीं किसी को, ये दिल मेरे लिए है।

बैठा रखा अगर है किसी और को तो तुमने
मर मर के फिर जियूंगी पर होंठ सीं लिए हैं।

अब मैं किसे सुनाऊं अपने मन की अनुभूति
आंखों से अश्क बहते रंज-ए-गुबार सा पिए हैं।

आओ जरा मेरे नजदीक बैठ जाओ
जज्बात जान लूं वो साथ अब तक जो जिए हैं।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - **किरण मोर**

पति - श्री अमरनाथ मोर

शिक्षा - बी.ए.

पता - मकान नं.६, रघुनाथ गंज वार्ड, घंटाघर, कटनी(म.प्र.)

मोबाइल - ८८७१२३५४०७, What's app-७६८७४५५३२२

ईमेल - kiranmor63@gmail.com

सक्रियता - सामाजिक संस्थाओं में गतिविधियां और समाज सेवा,
मध्यप्रदेश हिन्दी लेखिका संघ (वरिष्ठ लेखिका),
अखिल भारतीय संस्कार भारती संस्था (सदस्य),
श्री गहोई वैश्य महिला समिति (सदस्य),
श्री गहोई मनन संस्था (सदस्य),
सुदर्शना लेडीज क्लब (सदस्य),

प्रकाशन - श्रेष्ठ काव्य संग्रह (साझा संकलन) जे एम डी पब्लिकेशन (दिल्ली)।
शुभ प्रभात पत्रिका (साझा संकलन) सागर।
सृजन समीक्षा (काव्य संग्रह)।
सपनों का भंवर (एकल काव्य संग्रह)।
बदलते अक्स (एकल काव्य संग्रह) अंतरा प्रकाशन।
संस्कारों का हवन कुंड (आलेख संग्रह) अंतरा प्रकाशन।

सम्मान- राष्ट्रीय कवि संगम (कवियित्री प्रकोष्ठ)द्वारा शब्द शक्ति सम्मान २०१६
वूमेन आवाज सम्मान(आधी आबादी की गूंज) भोपाल में २०१८
अंतरा शब्द शक्ति (हिन्दी कलमकार सम्मान) २०१६
साहित्य कार स्वाभिमान सम्मान-२०१६
अंतरा शब्द शक्ति गौरव सम्मान-२०१६
म.प्र.हिन्दी लेखिका संघ से सशक्त नारी सम्मान-२०१६

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-058-2
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध